

उमः आ ध्याने ॥ ७॥ सिंह किं च समानं दृष्टि न गे ॥ रात्रं दारय ॥ सर्वलोक
 लसं पूर्णं महारामे न ॥ स ॥ म्यहं ॥ ॥ ते श्रीया ॥ य द्या स नं सुषा पी
 नं ॥ शुजा व न द व न ॥ स च ॥ ए न ॥ सं य कं महा ले श्री ॥ मह
 ऊ ॥ ॥ उ मा या ॥ उ न म म ॥ मु नि वा य गि उ मा द यो न मा न मः ॥ न म म ॥ द
 व द वा य का रा य ॥ का रा य ॥ न म म ॥ ॥
 उ ॥ ख व र ॥ न च म हा दे वं प चार्थ्य द रा वा हु कं ॥ सु रा सु मा ला च रं दे वं
 हे मा भ र रा भू त रा ॥ ख ड्ग त्रि झू ल व आ गि ॥ द म र पा त्र द वि रां

नमो ह निह नाथ ॥ ॥ ततः सर्व
सामग्री सङ्गी कृत्य ॥ वदा कून मं वा
मृग स्नान कृत्वा चन्दनादि मूषदा
हयत् ॥ ॥ गिना च मय ॥ मृग्या
र्य ॥ ॐ अशादि ॥ वाय ॥ ॥ गुन
नमस्तुत ॥ ॥ आत्म्या म ॥ मृग्या
दि ॥ ॐ अस्य न्यासस्य ॥ निन नि ॥ ॐ
नायाय लमृषय ॥ ॥ मख ॥ ॐ अ
नृय कन्द स ॥ ॥ द्वदि ॥ ॐ ह नि
हन देव गाय ॥ ॥ गुक् ॥ ॥ श्री वीजा
य ॥ ॥ यादो ॥ ॥ श्री ग कथन मः ॥
सर्वरिग ॥ ॥ कील काय ॥ ॥ वक्ष
जलि ॥ ॥ मम सर्वरिष्ट साधन विनि
यागः ॥ ॥ न्यासः ॥ ॥ हन मुय रुडा
दिष उ रु शा म ॥ ॥ मल व्यायक
॥ ॥ दव वाद का मर्या पूजा ॥ ॥ ॐ वा ह्वी
त्यानमः ॥ ॥ तता ॥ ॥ च्या पु पूजा ॥
ॐ ॥ ॐ आधन ग क्ता दि ॥ ॥ ॐ यो
या पु मु क्त स्य ॥ ॥ नम नि नि म कु ल
ले नि म य ॥ ॥ वदा दि म कु ल क तव
न्द य व्या नि म य ॥ ॥ ॐ कृ ल म

मन्त्रः ॥ ॐ ॥

द्राव गी र्थ वाहन ॥ ॐ गं दे व य म
नवे व र गा डा व लि स न स्व गी ॥ न म
द सि न्ध का व नी ज स सिं स नि वि
कृ ॥ ॥ १४ नू मू ड ॥ ॥ मृगी कृत्य ॥
अउर झ ल यू जा ॥ ॥ अ च न्द का य
म नमः ॥ ॥ गा ड व अदि ग न्ध न ॥ ॥
रु कु ल न द्वा न ॥ ॥ ग म य गी म कु ल
आश ॥ ॥ आ ल म यू जा ॥ ॥ आ स
न स्या य न ॥ ॥ यू जा ॥ ॥ ॐ ॥ ॐ आ ध न
ग क म ला स न य न मः ॥ ॥ ॐ म न
यु मृ षिः स ग नः कृ न्द ॥ ॥ इ म
द व ग आ स न वि नि या गः ॥ ॥
व धं रु लि नो ॥ ॥ ॐ दृ धी त्व या धः
ता ला का द वी त्व मि ष्ण ना ध ना त्व
अ ध न य मा रु ड य वि य आ स न
कृ न्द ॥ ॥ न म स्तु त ॥ ॥ ना वा च म ड
ल क र स र्व श कृ न्द न य ष
द ग दि मि कि न ॥ ॥ ॐ अ य स य र्थ नु
अ रु ता य रु ता रु स रि य ता ॥ ॥ य रु ता
वि षु क र्त्त न न ॥ ॥ अ नु नि वा रु य
॥ ॐ स रु य न रु रु रु मा ह ॥ ॥ ता उ

पुदिग्वन्धनकुमिकाहिः ॥ नः
 मायूजयअभा ॥ ॐ पूर्वकावाय ॥
 ॐ माधुमानलमाय ॥ ॐ नन्दिन ॥
 महाकालाय ॥ ॐ नन्दाय ॥ ॐ
 सैनन्दाय ॥ ॐ दक्षिणदावा
 य ॥ ॐ ज्ञानमानलमाय ॥ ॐ
 गणेशाय ॥ ॐ कृष्णाय ॥ ॐ
 वसुधाय ॥ ॐ प्रवसुधाय ॥ ॐ
 उल्लसदावाय ॥ ॐ हंसमानलमा
 य ॥ ॐ वलाय ॥ ॐ प्रवलाय
 ॥ ॐ हंसिने ॥ ॐ कन्दाय ॥
 ॐ अग्निमदावाय ॥ ॐ प्रोद्य
 मानलमाय ॥ ॐ रुद्राय ॥ ॐ सु
 रुद्राय ॥ ॐ उमाय ॥ ॐ वाल्म
 ष्ठीमाय ॥ ॐ सुखासासनयू
 का ॥ ॐ ज्ञानादि ॥ ॐ कृष्ण
 सनाय ॥ ॐ गन्धार्थना ॥
 नमो हगन्धसकलगुणोत्तमम
 णिकियूक्तानन्ताययोग्यो

लननमः ॥ ध्यानं ॥ ॐ गुरुं च
 क्रिया ॥ ॐ नमो महीतिद्वयक
 त्रैः ॥ स्वस्वरूपान्वीताद्वयहं हनि
 हनंरुज ॥ ॐ ध्यानयमा ॥
 आवाहनमद्राष्ट्रदण्डाय ॥ या
 यादिनामायवाचयदीर्घनेव
 ध्यानं निवदय ॥ ॐ गुरुं
 लि ॥ ॐ वंदीहो श्रीगुरुं नमो
 नायहो वंदी नमः ॥ प्रीतिं च
 क्रमदा ॥ ॐ नमः मशालि ॥
 वंदी श्रीगुरुं नमो नायलमाय
 यादकायूजयामिनमः ॥
 गुरुं उमनेमद्रा ॥ ॐ नमः
 का ॥ ॐ हनिहनाला ॥ ॐ गुरुं
 नमनायलमाय ॥ ॐ नमो हग
 वसवासदवाय ॥ ॐ नमो हग
 ममदातिवाय ॥ ॐ रमेरी
 कवाय ॥ ॐ लक्ष्मीनायलमा
 य ॥ ॐ गुरुं गीयूजा ॥ न्यासः ॥

ॐ मिहासनाय २ ॥ अवाहनादि
प्रयोजलि ॥ ॐ जं हं श्री वाचयेनम
ः ॥ ३ ॥ या निमदा ॥ ॐ अमिका
ये २ ॥ ॐ इ गजये २ ॥ ॐ गजाये ॥ ॐ
हयप्रियाये २ ॥ ॥ लक्ष्मी पूजा ॥
न्यासः ॥ ॐ कर्मासनाय २ ॥ अ
वाहनादिप्रयोजलि ॥ ॐ श्री ल
क्ष्म्ये नमः ॥ यमप्रदा ॥ ॐ नात्रा
यत्ने २ ॥ ॐ कमलाय २ ॥ ॐ सत्र
स्त्रये २ ॥ ॐ हविप्रियाये २ ॥ ॥
ॐ श्री लोभ २ ॥ ॐ वक्राय २ ॥ ॐ ग
श्वाय २ ॥ ॐ वनदाय २ ॥ ॐ
ॐ द्वादिदललोकपाले २ ॥
ॐ वेङ्काटाय २ ॥ ॥ गंगा
सूर्यनिष्कृतिवसुदेव २ ॥ अथाद्यान
प्रकृतं ॥ ॥ अथ वदोच्चैर्न ॥ ॐ ग
त्रायामीति द्वात्रिंशत् ॥ ॥ विर
ध ॥ ॐ प्रमदं ॥ ॐ नमः शवाय
न ॥ ॐ ते यारु ॥ ॐ द्वादिदं विष्णुः ॥

ॐ विष्णुनाद ॥ ॐ अमि यमा ॥
ॐ सहस्रगीर्वा ॥ ॐ संयष्टुपां व
अन्य ॥ ॐ अम्वज्जम्बिक ॥ श्री
न ॥ ॐ साकानातिन्द ॥ ॐ स
यष्टुसिगन्तसा ॥ ॐ अकृष्ट
॥ ॐ द्वादिदं विष्णु ॥ ॐ नमः शवाय
ॐ प्रमदं ॥ ॐ यामनन्द ॥ ॐ
विष्णु ॥ ॐ स्वस्तिन ॥ ॐ ययः
प्रथिया ॥ ॐ विष्णुनाद ॥ ॐ
अग्निद्विषा ॥ ॐ श्रीः शान्तिः ॥
ॐ धनमि ॥ ॐ गजासि ॥ ॐ याः
इलनी ॥ ॐ अन्नयन ॥ ॐ न
मः यष्टुयव ॥ ॐ मनाहति ॥
प्रतिष्ठा ॥ ॥ मूल १०८ अथ ॥
इत्त १० ॥ ॥ लक्ष्मी १० ॥ यवा
यष्ट १० ॥ ॥ मधुलक्ष्मी १० ॥ ॐ श्री
हविहनाय ॥ ॐ श्री लोभं स्वक
यानहयमकनी मालास्थिमाला
मालाद्विष्णुनादनी मालास्थिमाला

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
सर्वत्र भगवत्पदं सर्वत्र भगवत्पदं ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
सर्वत्र भगवत्पदं सर्वत्र भगवत्पदं ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
सर्वत्र भगवत्पदं सर्वत्र भगवत्पदं ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

श्रीगणेशाय नमः

ASHA ARCHIVES

3187

२१८ श्रीगणेशाय नमः

[illegible]

मामदीयग्रीहविद्वत्तयसर्ष्यामिडा
नत्सग ३ ॥ आत्माणीद ॥ मलुलस्य
दवस्येष्यस्यस्यस्य ॥ न्यासः ॥ आ
मालीन ॥ संहारनमद ॥ दवेस्यस्य
स्यस्यस्य ॥ हिलाददिगिरसिस्थः
॥ आद्यालकृत्वा ॥ न्यासि
धने ॥ मेवसादीदत्वा ॥ योजयत ॥ ॐ
विष्णुकानः सताविष्णु ॥ सज्ज्येषु
दिवस्वतः ॥ चक्षुष्यनीतथाजका
ष्येषु ॥ नक्षत्रस्यच ॥ तन्वायना
गलयता ॥ नमीठकिरुहजतगि ॥
॥ आचम्य ॥ स्याद्वि ॥ वाक् ॥
चय ॥ दत्तक ॥ यदादत्तंजीग ॥
मि ॥ नक्षत्राणां ॥ नक्षत्राणि ॥
विधिः ॥ ॥ शुभम् ॥

शकररायणाप्रीतिरु॥

रध्मनं ॥ अथ कनरधराणी स्वचवलमर्द्यो गण्धमाहिनि नृदे भलसुचक्रा विधनमा
 सुप्रचर्णी स्वाध्याः ॥ धीर्यै यस्य चरमे निलक्री स हि गोवधे च ता ह्युसनी ॥ ध्यातव्यं
 मनुरः तदा ह निरुनी सुवर्धकामप्रदी ॥ ॥ कलि कायनि संस्थे चरुधमा
 कोसनस्थितः ॥ रुनो ह्यरु निमद्य प्ररुडा दाहो मृक् दाह्यकं ॥ चकवक्र क्रिन्ननं
 चरुटा खलुन्दरुसर्प ॥ दका न्नं खवकुं ह वाभ न्नमा कः ॥ नमिगं ॥ चरु
 द्वा कं म ह्युत्मानं सर्वो रुनलरुषिगं ॥ गिधुलेम क मालो अर च कुं लं सग रधेन च ॥ सु
 दकि लभक ने या विषां विजा लमधमर्द्युतः ॥ यं मु ए नृप कं कृया क्विवना नायनम

सोमिष्य उपरो

उं नमो उल्कादवी ॥ ॥ वलिष्ठ उवाच ॥ कथं इः स्वनिमग्मसि किमर्थमलिनं मखं ॥ ममा
 रग्य क ध्यान्तः स्व उवाच यं ववि सां प्रगं ॥ ॥ ह निष्ठ उवाच ॥ नाह्यं नृ नम ह्युत्तामाधन
 नाभादिकं गगः ॥ यत्वादीनां कथं लयं यकि हर्षं वदयश ॥ ॥ वलिष्ठ उवाच ॥ गृहना
 जनयु व ह्युभि उल्काको गं विथरिह ॥ नाग रणं कादि रुनलं सर्व सो राग्यवर्धन ॥ धनलं
 क नृह नाजन उल्कादवा प्र पूजनं ॥ स्तोत्रवय ॥ गांव स विथरि नागय मयं ॥ ॥ अं अस्वर्षा
 उल्कादवाः स्तोत्रमनु मयः ॥ एषि ॥ अमुषि नृदु समाख्या गाव हरी कुन्द उवाच ॥ उल्कादवीवी
 उज्ज्वली गकिः का अरु कीलकं ॥ ममाधि इः स्वभा एं धं विनिधा गप्रकी र्हि गः ॥ उल्कादवी
 महानो ज्ञा अविमक्क विनालिनी ॥ मन्द मागा विला श्री आगिनी गलवा विनी ॥ गाविनी ॥

सर्वदः सानां निनि विप्रया निनी ॥ अत्र दायी भा दक नी सिद्धि दा सो ख दाय ॥ इह
 हनी मे हा मा या स व नि स य भ सि नी ॥ एव दः र द ह नी सो म्या इह गुह वि ना नि नी ॥ कृता
 दूय ध नी पूरु प द्या प द्या व नी नि वा ॥ व उ व नू पि ली गु का गु का ॥ कि प ना य न ॥ वा
 र ल ध नी व ना ए द्रा व नी ए रा ना नि नी ॥ र मि द ना ग रु कु च अं का न वी अ नू पि ली ॥
 अ प रू मि नि जा का ली भ भ ना ल य वा सि नी ॥ नि व पि या म हा व ली च र ल ध न म
 पू डि मा ॥ ए ग त य न म गु अं उ ल्का द द्याः स न व नि व ॥ अ धि वा धि ह नं य ल धि प्र लो
 क भ रू रू ॥ अ पा य धा यि न द द्या र द द्या रू व ल द्या यि न ॥ अ ए का ये नि द का य कु न

य रू ष धा नि र ॥ गु न ए का य भ मा य द वी ए कि य ना य च ॥ द य अ रू मा गु ना अ रू स र
 स य न स भ यः ॥ ॥ गि भ न ग रु के ला भ ग म उ ल्का द द्याः व स ना अः स मा दः ॥
 म भो ल्का था न ॥ अ रू व नू व र्म ध ना म अ धा य ध रू गु अ धा नि नी ॥ ग नू अ स न मा
 सी नां ग ग नि ग रु का नि का म ॥ ॥ द व द व न म स म्मु उ ल्का ग अ ल व नू पि लि ॥ स क रू
 अ म गं य ना ग न रू अ नां नि व ॥ ॥ अ म म नां ग ना न य रू अ रि म खो ह ॥
 श्री ग गो शाय न मः ॥ ॥ अ ग जा न न य द्यां किं ग जा न न म रु नि शं ज ने
 व द नं भ का रा ए क द नं सु या र म हे ॥ ॥